प्रातःक्लास ॐ पिताश्री

25.8.65 R-जो पिया के साथ.....ओमशांति। इस ज्ञान मार्ग में गीतों, कविताओं,डायलागों की भी जरूरत नहीं है। यह सब भक्ति मार्ग में चलता है। यहॉ तो है समझ की बाते। हर बात को बुद्धि से समझना है और है भी बहुत सहज। यानी यह ज्ञान बहुत सहज है। एक भी प्वाइंट से मनुष्य पुरुषार्थ करने लगते हैं। गीत सुनने वा कविता बनाने की जरूरत नहीं है। गृहस्थ व्यवहार में रहना है। धन्धा–धोरी करना है। बाप कहते हैं वो सब करते ; परंतु तुम मेरे से वर्सा कैसे ले सकते हो वो समझाते हैं। उठते–बैठते सब कुछ करते चुप रहना है। अंदर से विचार चलते रहें। बाप ने समझा दिया है बात बिल्कुल सहज है समझाने की। नई दुनियॉ पुरानी होने में समय लगता है। फिर पुराने से नए बनाने में इतना समय नहीं लगता है। बच्चों को समझाया गया है नई सृष्टि बाप रचते हैं। नए से फिर पुरानी होती है। सुख और दुःख की दुनियॉ बनी हुई जरूर है ; परंतु सुख कौन देते हैं , दुःख कौन देते हैं यह किसको भी पता नहीं है। बनी बनाई भी जरूर है। इस दुनियॉ से हम निकल नहीं सकते। इनको कहा जाता है ड्रामा। नाटक के बदली ड्रामा कहना अच्छा लगता है। नाटक जो होता है उनमें बदल–सदल हो सकती है। कोई को निकाल सकते हैं। कोई को एड कर सकते हैं। आगे नाटक थे। बाइस्कोप बाद में निकले हैं। बाइस्कोप में जो फिल्म शुरू हुई वो ही रिपीट होगी। यह बाइस्कोप निकला है इस ज्ञान को भी इस द्वारा पूरा समझने लिए। नाटक में फर्क हो जाता है। बाइस्कोप में फर्क नहीं हो सकता। इसलिए ड्रामा नाम ही ठीक है। एक स्टोरी है नई पावन दुनियॉ और पुरानी पतित दुनियॉ की। सिर्फ मनुष्यों को यह पता नहीं है कि दुनियॉ की आयु कितनी है। बहुत लम्बी–चौड़ी आयु दे दी है। मनुष्य कुछ भी समझ नहीं सकते। नई दुनियॉ में कितने समझदार ,धनवान ,पवित्र थे। सर्वगुण सम्पन्न.....थे। बाबा आज क्यों समझा रहे हैं कि बच्चे भी जाकर ऐसे2 भाषण करें। भारत की पहली2 महिमा करनी चाहिए। भारत को ऐसा किसने बनाया?वो भी महिमा निकलेगी परमपिता परमात्मा की जिसको सभी याद करते हैं। याद क्यों करते हैं? क्योंकि पुरानी दुनियॉ में बहुत दुःख है। आचार्य आदि को कुछ भी पता नहीं है। सतयुग–त्रेता को सुखधाम कहा जाता है। वो है ईश्वरीय सीापना। फिर आधाकल्प जो दुःख है वो है आसुरी स्थापना जिसमें मनुष्य 5 विकारों में फॅस पड़ते हैं। समझते भी हैं बाप लिबरेट करते हैं। जो लिबरेटर है वो फूसाने वाला थोड़े ही होगा। उनका नाम ही है दुःखहर्ता–सुखकर्ता। उनके लिए हम दुःखहर्ता नहीं कह सकते। यह किसको पता नहीं है कि दुःख देने वाले 5 विकार है जिससे ही बाप आकर छुड़ाते हैं। यह भी बड़ी सहज समझने की बात है। सारी दुनियॉ में इस समय रावण राज्य है। सिर्फ लक की बात नहीं है। भक्ति मार्ग की कैसी फालतू बातें हैं। कितने शास्त्र बनते हैं। विलायत में भी जो फिलासफर हैं अनेक प्रकार की बड़ी2 किताब बनाते रहते हैं। ढेर किताब हैं। उनमें नावेल्स भी हैं। मनुष्यों के अपने2 विचार हैं। जिसको जो बुद्धि में आया वो लिख देंगे। वैसे ही यह शास्त्र है। अपना2 शास्त्र बना देते हैं। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। भगवानुवाच यह वेद–शास्त्र पढ़ना यज्ञ,तप आदि करना जो कुछ तुम करते आए हो वो सब उतरती कला है। जो कुछ तुमने बनाया है वह अपन को गिराने लिए। तुमको जो मत मिली है वो गिरने की ; क्योंकि उतरती कला है। पावन दुनियॉ थी। अभी पतित दुनियॉ है। आधा कल्प नई दुनियॉ। जैसे 24 घंटे होते हैं। 12 घंटा बाद दिन पूरा हो फिर रात होती है। वैसे यह ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात गाया जाता है। विष्णु के दिन–रात नहीं कहेंगे। विश्णु कुछ जानता ही नहीं। यह कितनी गुह्य बातें हैं। सिवाय बाप के कोई समझा ना सके। बहुत बच्चे हैं जो थोड़ी सर्विस करने से ही बड़ा अहंकार आ जाता है। समझते हैं हमारे जैसा कोई है नहीं। यह (साकार ब्रह्मा) जो कुछ सुनाते हैं वो हमको जॅचता नहीं है। ऐसा देहअभिमान

में मिजाज़ चढ़ जाता है। पहाका है ना चूहे को मिली हेडगिरी तो अपन को पंसारी समझने लग पड़ते हैं। बाप समझाते हैं। अभी तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान में जाना है। अभी अजुन अपनी बादशाही थोड़े ही स्थापन हुई है। थोड़ा ज्ञान मिलने से ही मगरूरी बहुत आ जाती है। फिर बाबा में भी ऑख नहीं डूबती। समझते शिवबाबा तो शिवबाबा है। ब्रह्मा कुछ भी नहीं है। बाबा हमेशा कहते हैं ऐसे समझो शिवबाबा ही समझाते हैं। समझते हैं यह ब्रह्मा क्या है?हमको तो शिवबाबा से लेना है। ब्रह्मा तो खुद भी कहते हैं ना हम कुछ नहीं जानते। ऐसे भी नहीं हैं। समझते हैं हमारा तो शिवबाबा से योग है। ब्रह्मा से भी अपन को होशियार समझते हैं। बाप कितना सहज बच्चों को समझाते रहते हैं। सिर्फ शिवबाबा को याद करना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह बातें भी तुम अबलाएं ही समझ सकती हो। नई दुनियॉ और पुरानी दुनियॉ। नई दुनियॉ रचने वाला बाप है। नई दुनियॉ स्वर्ग था। फिर नर्क किसने बनाया?रावण। रावण कौन है यह राज़ भी तुमको समझाया है। कोई विद्वान, पंडित आदि नहीं समझ सकते। वो तो कह देते है जगत मिथ्या। यह सब कल्पनाएं हैं। वो जो शास्त्र आदि सुनाते हैं वो तो कह ना सकें कि यह कल्पना है वा रॉग है। तुम समझा सकते हो। अगर जगत बना ही नहीं है तो तुम तब कहॉ बैठे हो। यह जो वर्ल्ड रिपीट होती रहती है। उसकी पूरी नालेज चाहिए ना। नालेज ना होने कारण कह देते सब मिथ्या है। जिसने जो सुनाया सो सत। बुद्धि में शास्त्रों का भूसा भरा हुअ है। तुम तो एक बात में ही खुश होते हो। उन विद्वानों , पंडितों आदि को तो शास्त्रों का बहुत घमंड है। है कुछ भी नहीं। बाप तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। आधा कल्प बाप ने वर्सा दिया। फिर रावण ने हराया है। रामराज्य चाहिए। तो जरूर रावण राज्य है ना ; परंतु ऐसा समझते थोड़े ही है कि हम आसुरी रावण सम्प्रदाय हैं। तुम जानते हो वह है आसुरी सम्प्रदाय। यह है ईश्वरीय सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय को ईश्वरीय सम्प्रदाय की पहचान नहीं है। सब नर्कवासी हैं। एक–दो को काटते रहते हैं। उनको पता ही नहीं है कि ईश्वर क्या चीज है। अपना घमंड कितना बड़ा है। तुम बच्चे जानते हो हम अभी ईश्वर के बने हैं और उनकी मत पर चल रहे हैं। कोई भी बड़े हाल में लेक्चर करो। समझाना है बाप ने नई दुनियॉ रची। स्वर्ग था। यह चित्र तो बहुत अच्छे हैं। सबके पास बड़े चित्र होने चाहिए। बड़े पर समझाना अच्छा होता है। चक्कर सामने खड़ा है। संगमयुग भी लगा हुआ है। कलियुग है काला पतित अर्थात् उनमें लोहे की खाद पड़ने से काले हो गए हैं। भारत कितना गोल्डन एज्ड था। अब फिर उनको आयरन एज से चेंज होना ही पड़े। उनकी स्थापना इनका विनाश होना पड़े। गाया भी जाता है परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति है। त्रिमूर्ति का अर्थ कोई नहीं समझते हैं। रोड पर भी त्रिमूर्ति नाम रखे हुए हैं। वास्तव में त्रिमूर्ति है ब्र.वि.शं. तीनों देवताएं अलग2 हैं। इन सबसे ऊँच ते ऊँच है परमपिता परमपिता शिव करनकरावनहार। उनको गुम कर दिया है। देवताओं से भी ऊपर तो वो निराकार भगवान ही है। जैसे बाप निराकार है हम आत्माएं भी निराकार हैं। हम यहॉ आते हैं पार्ट बजाने। ल.ना. की डिनायस्टी थी। एक–दो पिछाड़ी राज्य करते आए हैं। तो स्वर्ग की महिमा सुनानी पड़े। भारत कितना धनवान था। प्योरिटी पीस प्रासपर्टी थी। कब अकाले मृत्यु नहीं होती थी। नई दुनियॉ थी। बाप ने ही नई दुनियॉ रची। अब तो पुरानी आयरन एज्ड दुनियॉ है ना। कितने दु:खी हैं। भारत श्रेष्ठाचारी था। अब वो ही भारत भ्रष्टाचारी है। प्रश्न उठता है भ्रश्टाचारी किसने बनाया? रावण ने। सतयुग में रावण राज्य हो नहीं सकता। यह है नर्क डेविल वर्ल्ड। सतयुग ही डीटी वर्ल्ड। आधा कल्प डीटी राज्य चलता है। फिर उतरती कला में आते हैं। उतरते2 फिर डेविल बनना

ही है। फिर यह झूठे शास्त्र आदि सब जाते हैं। भारत बिल्कुल ही कंगाल बन जाता है। तो नई दुनियॉ और पुरानी दुनियॉ का कान्ट्रस्ट बतलाना चाहिए। नई दुनियॉ में 16 कला सम्पूर्ण होते हैं। अभी पुरानी दुनियॉ में कोई कला ना रही है। फिर बाप 16 कला बनाते हैं। कहतें हैं बच्चे मनमनाभव। माम् एकम् याद करो। यह है भगवानुवाच। भगवान तो निराकार ही है। उनको ही पतित–पावन ज्ञान सागर कहते हैं। कृष्ण को ज्ञान सागर नहीं कह सकते। फिर गीता में कृष्ण का नाम क्यों डाल दिया है?कोई द्वारा सा. हुआ तो कहेंगे बस यह तो कृष्ण का रूप है। (अरविंदो घोष का मिसाल) सन्यासी लोग भी अंदर बहुत छिपे रहते हैं। वेष बदल देते हैं। उन्हों की भी सी. आई.डी. रखते हैं जो अंदर घुस जॉच करते रहते हैं। तो अरविंदो घोष में कोई ताकत नहीं थी। कोई आत्मा ने आकर प्रवेश किया तो उनका प्रभाव निकल पड़ा। सब एक्टर्स का ड्रामा में नम्बरवार पार्ट है। तुम बच्चों ताकत बहुत है जो तुम आलराउन्ड पार्ट बजाते हो। तो दुनियॉ में अनेक प्रकार के हैं। मनुष्यों का भाव बैठ जाता है। फिर भी बीमारी , रोग , दुःख आदि तो होता ही है। भाव किसमें बैठ जाता है तो फिर उनका लाकेट बनाय गले में डाल देते हैं। गुरू का लाकेट पहन गुरू को याद करते रहते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। बस। अगर ईश्वर सर्वव्यापी है फिर तो गुरू उनमें कोई फर्क नहीं हुआ। ऐसे ढेर हैं समझने वाले। तो बच्चों को पुरानी दुनियॉ और नई दुनियॉ का भी राज समझाया। बाप नई दुनियॉ रचत हैं।अभी सब बाप को बुलाते रहते हैं हे पतित–पावन आओ। आकर पावन दुनियॉ स्थापन कराओ या हमको पावन बनाय ले चलो। धाम है दो–निर्वाणधाम और सुखधाम। सन्यासी तो नालेज देते ही हैं मुक्ति के लिए। जीवनमुक्ति के लिए दे ना सके। तुम देवी–देवता धर्म वाले ही जो पुजारी बनें हैं फिर पूज्य बनना है। भारतवासी ही कृष्ण को याद करते हैं। वो है कृष्णपुरी। यह है कंसपुरी। श्रीकृष्ण है सतयुग का प्रिंस। प्रिंस–प्रिंसेज की महिमा है। कुमार–कुमारी की महिमा होती ही है ; क्योंकि पवित्र रहते हैं। नहीं तो कृष्ण से राधे की जास्ती होनी चाहिए ; परंतु यह किसको पता नहीं है। फिर कृष्ण फिर राधे क्यों?कहते भी हैं राधे–कृष्ण, कृष्ण–राधे मुश्किल कोई कहेंगे। समझते हैं बच्चा वर्से का हकदार बनता है। इसलिए जास्ती कृश्ण की महिमा दिखाई है। यह भी समझने की बातें हैं। कृष्ण बनेंगे तो वर्से का हकदार बनेंगे। यहॉ तुम सब हो बच्चे। बाप कहते हैं जैसा पुरुषार्थ करेंगे उतना अपने लिए ही वर्सा पावेंगे जन्म जन्मांतर के लिए। जितना चाहे पुरुषार्थ करो। बाप आत्माओं से बात कर रहे हैं। पुरुषार्थ से तुम उॅच वर्सा प्राप्त कर सकते हो। नज़र आत्मा पर ही रहती है। विलायत में बच्ची पैदा होती है तो खुशी होती है। यहॉ बच्चा पैदा होवे तो खुश होंगे। हरेक की अपनी रसम–रिवाज है। तो बच्चों को अब यह तो बुद्धि में है वर्सा बेहद का बाप देते हैं। फिर श्राप माया देती है। बेहद का बाप वर्सा दे रहे हैं। वो ही गॉडफादर , स्वर्ग का रचयिता है। कृश्ण के लिए कोई कह ना सके। परमपिता परमात्मा ही पतितों को पावन बनाय नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। सहज राजयोग और ज्ञान सिखलाते हैं। ऐसे2 कर दिया है। गीता का भगवान तो बाप है। ना कि बच्चा। कृश्ण तो रचना है। उनको यह वर्सा बाप से मिला। कैसे?सो बैठ समझो। कोई भी बात उठाय उन पर समझाने लग जाओ। पुरानी दुनियॉ नई दुनियॉ पर समझाने से उसमें सब आ जाता है। अभी अनेक धर्म हैं। उनके बाद फिर एक आदि सनातन देवता धर्म की स्थापना हो रही है। कितना समझाया जाता है इन 5 विकारों को छोड़ो। घर में भी किस पर क्रोध ना करो। खयाल आना चाहिए। जैसे कर्म हम करेंगे हमको देख फिर और करेंगे। मैं विकारी बनूॅगा तो मुझे देख और भी विकारी बनेंगे। स्त्री को एडाप्ट किया है। उनको खड्डे में गिराने लिए थोड़े ही किया है। बाप फरमान करते हैं अब पवित्र बनो। स्त्री को भी पवित्र बनाओ। कोई पर क्रोध ना करो। तुमको देख वो भी करने लग पड़ेंगे। मेल तो रचयिता है। तो स्त्री को भी पकड़ना चाहिए। समझाना पड़े। फिर अगर तकदीर में ही ना होगा तो क्या कर सकते। समझाना है बाप कहते हैं पवित्र बनो तो पवित्र दुनियॉ के मालिक बनोगे। बाप

समझाते हैं तुमने 84 जन्म कैसे लेते हैं। पहले तुम सतोप्रधान पावन थे। फिर रजोप्रधान बने। अब फिर मुझे याद करो तो सतोप्रधान पावन बनोगे। गीता के वर्शन्स ही भगवान कह रहे हैं। गीता में कृष्ण का नाम डालने से उनकी सारी जीवन कहानी खतम हो जाती है। बाबा ने समझाया है तुम सीख सकते हो यह गीता तो बर्थ नॉट पेनी है। इन पढ़ने से भारत कंगाल बन पड़ा है। समझाने की हिम्मत चाहिए ना। कइयों को फिर उल्टा घमंड आ जाता है। हम बहुत होशियार हैं तो देहअभिमान में आय गिर पड़ते हैं। समझते हैं हम तो शिवबाबा के हैं। यह नहीं समझते। इनकी दिल से अगर उतरे तो उनकी दिल से भी उतर जावेगी। बाप को याद ना करने से उल्टे काम ही करेंगे। उनकी दिल से भी उतर पड़ेंगे। बाप तो सब कुछ समझाते रहते हैं। बहुत बच्चे समझते हैं हम तो शिवबाबा को ही जानते हैं। उनसे ही कल्याण होना है। भूल करते हैं तो बाबा इशारा देते हैं ; परंतु थोड़ा भी समझाने से लून–पानी हो जाते हैं। लून–पानी थोड़े ही बनना है। समझाया जाता है ऐसे ना करो। कोई2 तो ऐसे हैं जो एक–दो रिगार्ड देने भी ना आता। अपन से बड़े साथ तुम2 कह बात करते हैं। बाप कहते हैं बच्चे इस सेंटर से तुम बदली हो फलाने सेंटर पर जाओ तो भी बाप का फरमान नहीं मानते। समझते हैं यह बाबा कहते हैं। शिवबाबा थोड़े ही कहते हैं। पता नहीं शिवबाबा उनको कैसे कहेंगे। क्या ऊपर से रड़ियॉ मारेंगे। उनको कहा जाता है महान मूर्ख। ज्ञान शिवबाबा देते हैं। तुम उनका फरमान समझो ना। वो बाबा कहते हैं तुम फलाने सेंटर पर जाकर रेख–देख करो। सेंसिबुल बच्चों को तो शौक होना चाहिए फलाना सेंटर गिरा हुआ है हम उनको जाए उठाऊँ। बिगर कहे जो करे सो देवता। कहे से करे सो मनुष्य। कहने से भी ना करे तो.....। अच्छा, बापदादा का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमार्निंग। ॐ।